Sem - VI   HISTORY OF ECONOMIC THOUGHT (ECC601)
Paper - XIII.

Q. गांधी जी के विचारों में स्वदेशी के आर्थिक स्वरूप की व्याख्या करें

Ans. गांधी जी के स्वदेशी व्रत के पीछे बड़ी ही गूढ़ क्रांति का बीज छिपा हुआ है। आर्थिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक उद्धार का रहस्य इसके अन्तर्गत आता है।

स्वदेशी का अर्थ विदेशी वस्तुओं का परित्याग और गृह निर्मित वस्तुओं का प्रयोग, ताकि गृह उद्योग का संरक्षण हो तथा विशेष रूप से उन उद्योगों का जिनके अभाव में भारतवर्ष की दशा काफी दयनीय हो जाएगी। गांधी जी स्वदेशी व्रत की व्याख्या में बहुत कुछ कहा और बहुत कुछ प्रयोग भी किया। जब वे अफ्रीका के आंदोलन से निकल कर भारत में आये तब उन्होंने स्वराज्य को स्वदेशी के साथ जोड़ दिया।

गांधी जी ने भविष्यवाणी की - "भारत स्वदेशी की भावना के द्वारा स्वतन्त्र हुआ है तथा अब इसका आर्थिक विकास भी इसी भावना के द्वारा हो सकता है और लिखते हैं - "स्वदेशी की भावना संसार के सभी स्वतन्त्र देशों में है। स्वदेशी नहीं है जो खुद स्वदेशी हो। किसी भी भारतीय को अपने देश की बनी वस्तु का व्यवहार करने के लिए उपदेश करना पड़े तो यह उसके लिए शर्म की बात है।"

उपर्युक्त बातों से यहाँ साफ स्पष्ट है कि गांधी जी के स्वदेशी व्रत के दो महत्वपूर्ण घटक हैं -

1. विदेशी वस्तुओं का परित्याग
2. ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योगों का विकास

विदेशी वस्तुओं का परित्याग :-

इस सदर्भ में गांधी जी ने कहा कि स्वदेशी व्रत का पालन करने वाला हमेशा अपने आस-पास निरीक्षण करेगा तथा जहाँ-जहाँ पड़ोसी की सेवा की जा सकती है अर्थात् जहाँ-जहाँ

Scanned with CamScanner

उनके हाथ का तैयार किया हुआ आवश्यक माल होगा, वहाँ-वहाँ वह दूसरा छोड़कर उसे लेगा, फिर चाहे वह महँगी और कम दर्जे की ही क्यों न हो। ~~स्वदेशी वस्तु पहले महँगी और कम दर्जे~~

भारत अपने जीवन का उत्तम निर्वाह तभी कर सकता है जब वह अपने प्रयत्न से या दूसरों की मदद लेकर अपनी आवश्यकता की सारी वस्तुएँ अपनी सीमा में उत्पन्न करने लगे।

गांधी जी ने एक निपुण अर्थशास्त्री की तरह अपनी प्रार्थनाओं में स्वदेशी व्रत जोड़ दिया, दूसरी ओर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार प्रारंभ किया। उन्होंने स्वदेशी के अन्तर्गत केवल वस्त्र ही नहीं लिया बल्कि खाने-पीने की चीजें, उत्पादन की व्यवस्था, उसमें लगी पूंजी, लगी कुशलता सबके भीतर स्वदेशी का व्रत डाला।

गांधी जी ने कहा है कि - "किसी भी चीज को स्वदेशी तभी कहा जा सकता है जबकि यह सिद्ध हो जाए कि वह जन समुदाय के लिए हितकारी है और उसमें काम करने वाले कारीगर और मजदूर दोनों हिन्दुस्तानी है।"

ग्रामोद्योग एवं कुटीर उद्योग :-

स्वदेशी और ग्रामोद्योग का विचार गांधी जी के आर्थिक ढाँचे की आधारशिला है। गांधी जी ने आवश्यक वस्तुओं के संदर्भ में क्षेत्रीय आत्मनिर्भरता पर बल दिया। उनका मत था कि हमें ऐसे गांवों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो अपने उपभोग के लिए आवश्यक वस्तुओं का निर्माण कर सके। हमारे समुदायों को दूसरों पर निर्भर न होकर आत्म निर्भर होना चाहिए।

विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत गांधी जी ने छोटे-छोटे उद्योगों की स्थापना पर बल दिया, ताकि कच्चे माल को उसी स्थान पर पक्के माल में परिवर्तित किया जा सके। इससे ग्रामीणों को न केवल अपने उत्पादन का पूर्ण

Scanned with CamScanner

लाभ मिलेगा बल्कि वे अपने आस-पास के समुदायों की, यातायात के साधनों पर निर्भर न रहकर, सहायता भी कर सकेंगे।

गांधी जी ग्रामोद्योग में पूरक धन्धों का रूप भी देखते थे। भारतीय किसान साल में कई महीने बेकार रहते हैं। इस खाली समय में वे छोटे एवं कुटीर उद्योग को करें।

स्वावलम्बन को कार्यान्वित करने के लिए ग्रामोद्योग काफी सहायक होगा। जब हम देश की जनता को अधिक से अधिक अधिकार देने की बात करते हैं तो हमें ऐसी अर्थव्यवस्था चलानी पड़ेगी जिसमें प्रत्येक गांव अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं का उत्पादन गांव में ही करे। अतः ग्राम स्वावलम्बन के लिए ग्रामोद्योग आवश्यक है।

इन उपयुक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी के "स्वदेशी" भावना के पीछे आत्मनिर्भरता तथा स्वावलम्बन की प्रबल योजना थी। स्वावलम्बन और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए गांधी जी ने अनेक प्रयोग भी किया था जैसे - चरखा चलाना, चक्की चलाना, सूत कातना, कपड़ा बुनना व छोटे बड़े काम स्वयं करके लोगों के सामने आदर्श स्थापित किया था।

— Prof Dr. Prashant Kr. Khare
Deptt of Economics
Tata college, Chaibasa.
K.U.

Scanned with CamScanner